शक्ति की युक्ति

(1:19–23)

हैनरी फोर्ड ने कारों को साधारण लोगों के लिए उपलब्ध कराने का सपना देखा था। वह इसे केवल धनी लोगों का खिलौना ही नहीं बने रहने देना चाहता था। इसके लिए, उसने कारों को जन साधारण के लिए तैयार करने की नीति अपनाई। इसके लिए उसने निर्माण तथा बिक्री मूल्यों को युक्तिसंगत बनाने के लिए लाइन में अलग–अलग लोगों द्वारा उसे जोड़ने की नीति ढूंढ़ी। उसकी युक्ति से कार निर्माण में एक बहुत बड़ी क्रांति आ गई।

हम विभिन्न लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए कई युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं, चाहे यह किसी काम को बढ़ाने के लिए हो, किसी विशेष बात में "ए" ग्रेड पाने के लिए या घर खरीदने के लिए। हमारी कुछ युक्तियां काम आ जाती हैं जबकि कुछ नाकाम रहती हैं।

बाइबल युक्ति की एक पुस्तक है। यह विभिन्न योजनाएं प्रस्तुत करती है, जिन्हें लोग जीवन का सामना करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। यह हमें दिखाती है कि कौन सी युक्ति कारगर है और कौन सी नहीं। बाइबल वे युक्तियां बताती है, जिन्हें लोगों ने परिवार, विवाह, काम, और मित्रता के लिए इस्तेमाल किया था। मुख्यतः यह ऐसी युक्तियां देती है जिनका सम्बन्ध परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाने, परमेश्वर की आज्ञा मानने और परमेश्वर की सेवा करने से होता है। पवित्र शास्त्र में युक्ति का एक सिद्धांत यह है कि *परमेश्वर के लोग उसका काम करने के लिए अपनी नहीं बल्कि उसकी सामर्थ पर भरोसा करें।*

यरीहो पर अधिकार करने के इतिहास पर विचार करें। किसने सोचा होगा कि शत्रु की सेना की तरह नगर की चारदीवारी पर आक्रमण करने के बजाय सात दिन तक शहर के इर्द–गिर्द घूमकर परमेश्वर की सामर्थ में भरोसा करके उन दीवारों को गिरा दिया जाएगा? युद्ध की वह योजना परमेश्वर की थी।

कौन ऐसा सेनापति होगा जिसने शत्रु के सबसे कुशल हज़ारों सिपाहियों का सामना करने के लिए सेना को 32,000 के योद्धाओं से 300 योद्धाओं तक रहने दिया हो? परमेश्वर ने गिदोन को यह युक्ति दी जिससे उसने परमेश्वर की सामर्थ में भरोसा करके काम किया।

परमेश्वर अपने कार्य को करने के लिए अपने लोगों से उसकी सामर्थ पर भरोसा करने की अपेक्षा करता है न कि अपनी सामर्थ पर। पवित्र शास्त्र को पढ़ने पर हमें इस मूल युक्ति का एक से एक उदाहरण मिलता है।

परमेश्वर बदला नहीं है। वह आज भी अपने लोगों से इच्छा करता है कि वे उसकी सामर्थ पर भरोसा रखें। पवित्र शास्त्र के हमारे भाग का यह संक्षिप्त सबक है। यह किसी कलीसिया के लिए कार्य की बुनियादी युक्ति को बताता है। क्या हम प्रभु के कार्य को अपनी

सामर्थ से आगे बढ़ाएंगे या परमेश्वर की सामर्थ से इस पर कार्य करेंगे?

पौलुस ने लिखा है:

> और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है। और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार। जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर। सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर जाने वाले लोक में भी लिया जाएगा, और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है (1:18–23)।

18 आयत से आरम्भ करके, पौलुस ने प्रार्थना की कि इफिसुस की *एकलेसिया* (चर्च) इन तीन अदृश्य वास्तविकताओं को समझ जाए: (1) उन्हें मिलने वाली विलक्षण आशा, (2) उन्हें दी जाने वाली परमेश्वर की मीरास, और (3) परमेश्वर की वह सामर्थ जिससे उन्हें काम करना चाहिए।

पौलुस ने इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि मसीह में हमारा सामना सम्भवत: सबसे बड़ी शक्ति से होता है, "शक्ति" के लिए कई शब्दों का इस्तेमाल किया। परमेश्वर हर स्थानीय कलीसिया को उसकी अतुलनीय महान सामर्थ से कार्य करने की इच्छा करता है।

स्थानीय कलीसियाएं कार्यक्रमों का उपयोग कर सकती हैं। हम निर्देश देने, संगठित करने और जीवन की परिस्थितियों से व्यवहार के लिए आधुनिक ढंगों का इस्तेमाल कर सकते हैं। हम लोगों को अच्छे माता-पिता बनने, अपने विवाह सम्बन्ध मजबूत बनाना सिखाने के लिए, अपना सम्मान बनाने के लिए, बाइबल अध्ययन करना सीखने के लिए, सिखाने के लिए और बहुत से कार्यों को, जो हमारे कार्यों और स्थानीय मण्डलियों के कार्यक्रमों से सम्बन्धित हैं, सहायता कर सकते हैं। यह सब करने के बावजूद भी हम परमेश्वर की सामर्थ से कार्य करने के लिए परमेश्वर के लोगों के लिए बहुत कुछ करना चुन सकते हैं। वह हमें हमारे इस पाठ के शब्दों में इस आवश्यकता को समझने में सहायता करता है।

परमेश्वर हमारा भरोसा अपनी सामर्थ पर बनाता है

पौलुस ने इफिसुस की *एकलेसिया* के लिए परमेश्वर की सामर्थ को जानने, इसमें भाग लेने और इसके द्वारा चलाए जाने के लिए प्रार्थना की। इस प्रेरित ने परमेश्वर की सामर्थ के तीन विशेष प्रदर्शनों का उल्लेख किया जिनसे हमें प्रोत्साहन मिलता है कि उस सामर्थ से लाभ लेने के लिए कुछ भी हो जाए, हमें काम करना चाहिए।

1. *मुर्दों से मसीह का जी उठना* (1:20)। क्रूस हमारे सामने परमेश्वर के *प्रेम* का

सबसे बड़ा प्रदर्शन लाता है; मसीह का पुनरुत्थान हमें उसकी *सामर्थ* का अंतिम प्रदर्शन एक गीत के शज़्द हमें ईश्वरीय सामर्थ के इस प्रदर्शन का स्मरण कराते हैं:

उस दिन कब्र पर एक शज़्द नहीं सुना गया था,
कब्र की रखवाली करते हुए घूमते हुए सिपाहियों के कदम ताल ही थे।
एक दिन, दो दिन, तीन दिन, बीत गए,
ज़्या यीशु सदा के लिए मर सकता था?

ज़्या पिता ने उसे छोड़ दिया था,
हमारे पाप को तुच्छ जानकर, उसने अपने पुत्र से मुंह मोड़ दिया था,
सारे अधोलोक में यह फुसफुसाहट होती होगी, ''उसे भूल जाओ, वह मर गया
है।''
फिर पिता ने अपने पुत्र की ओर नीचे देखा और कहा,

''उठ जा, मेरे प्रिय! उठ जा, मेरे प्रिय!
कब्र का अब तुझ पे कोई वश नहीं है।
न मृत्यु का डंक, और न कोई पीड़ा।
उठ जा, उठ जा, मेरे प्रिय।''[1]

यीशु जी उठा। उस सामर्थ की कल्पना करें जो कब्र में जाकर अनन्त जीवन के एक विस्फोट के रूप में फूट निकली। ऐसी सामर्थ केवल परमेश्वर के पास ही है। यह सोचना कि हम इसके बिना कुछ कर सकते हैं, हमारी कितनी मूर्खता होगी!

2. *मसीह को महिमा मिलना।* परमेश्वर ने अपनी सामर्थ न केवल पुनरुत्थान में बल्कि फिर से यीशु को महिमा देकर दिखाई। ''उसने मसीह ... को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर। सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर जाने वाले लोक में भी लिया जाएगा, बिठाया'' (1:20, 21)।

''यीशु मेरा प्रभु है'' जैसे गीत गाकर हम सच्चाई का गुणगान कर रहे होते हैं। वह सचमुच प्रभु है। उसे सब नामों से ऊपर नाम दिया गया है। स्वर्गदूतों की, शैतानी या मानवीय किसी भी शज़्ति की प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ से तुलना नहीं की जा सकती। उसकी सामर्थ हमें उसमें भरोसा रखने के सज़्बन्ध में गंभीर होने के लिए पुकारती है। जब उसके लोग उसकी सामर्थ में चलते हैं तो उसकी, जो सिंहासन पर बैठा है, महिमा होती है।

3. *कलीसिया की ओर से यीशु की सर्वोच्चता।* आयत 22 कहती है, ''और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।'' परमेश्वर की सामर्थ में यीशु को भौतिक संसार और आत्मिक संसार दोनों का सर्वसज़्ा सज़्पन्न बनाया है। यीशु ने कहा, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है'' (मज़्ी 28:18)।

वह सब पर प्रज़ु है। परमेश्वर ने यीशु को केवल प्रभुओं का प्रभु ही नहीं बनाया बल्कि उसने उसे "सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर *कलीसिया* को दे दिया।" अन्य शज़्दों में, परमेश्वर पिता ने सारी महिमा के प्रभु को कलीसिया को दे दिया है! यीशु कलीसिया की भलाई के लिए शासन करता है। वह यह देखने के लिए सिंहासन पर बैठा है कि कलीसिया वह बने जो परमेश्वर उसे बनाना चाहता है। परमेश्वर की सामर्थ में बड़ा भरोसा रखने की दिशा में बढ़ने के लिए मण्डलियों के लिए एक और कारण है, ज़्योंकि यीशु भी कलीसिया को दिया गया है।

परमेश्वर यीशु के पुनरुत्थान, महिमा पाने तथा उसकी सर्वोच्चता के द्वारा अपनी सामर्थ में हमारा भरोसा पैदा करता है।

परमेश्वर हमें अपनी सामर्थ में भाग लेने के लिए आमन्त्रित करता है

बाइबल की युज़्तियों में से निकलने वाली एक प्रमुख युज़्ति यह है कि परमेश्वर के लोग अपनी नहीं बल्कि उसकी सामर्थ पर भरोसा करें। इसे स्थानीय कलीसियाओं पर लागू करें तो परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी सामर्थ से चलें और उसकी सामर्थ में हमें योगदान देने के लिए बुलाता है।

एक स्थानीय कलीसिया में उसकी सामर्थ, उसकी उपस्थिति और प्रभु यीशु स्पष्ट दिखाई देना चाहिए। एक मण्डली के लिए आवश्यक है कि लोगों को वह स्थान दिखाए जहां वे परमेश्वर के राज्य को देखकर उसका अनुभव कर सकें।

1:22, 23 में कलीसिया के सज़्बन्ध में पौलुस की बात पर ध्यान दें: मसीह "कलीसिया" का सिर है, जो "उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।" इन आयतों में कलीसिया के बारे में दो सच्चाइयां मिलती हैं।

1. *हम "उसकी देह" हैं।* यीशु तथा स्थानीय कलीसिया में गहरी एकता पाई जाती है। मानवीय देह पर ध्यान दें। इसके बहुत से अंग हैं अर्थात हाथ, कान, पांव, फेफड़े, भुजाएं, धमनियां इत्यादि। हर अंग का अपना महत्व है। सब अंगों के काम करने पर शरीर स्वस्थ होता है। सिर, हृदय, भुजाओं तथा शरीर के भीतरी अंगों के काम करने से जीवन चलता है।

कलीसिया के लिए यीशु की यही योजना है। इस सच्चाई को गलत न समझें: *एक देह के रूप में कार्य करने पर कलीसिया किसी संगठन की तरह नहीं बल्कि परमेश्वर की सामर्थ से चलती है।* एक देह के रूप में और एक संगठन के रूप में कलीसिया में अन्तर करके देखें, जैसा कि पाठ के अन्त में चार्ट में दिखाया गया है।

संगठन के रूप में कलीसिया तथा मसीह की देह के रूप में कलीसिया में भारी अन्तर है। आज स्थानीय कलीसियाओं में बहुत सी असफलताएं और समस्याएं केवल इसी कारण हैं कि देह के रूप में काम न करके हम संगठन के रूप में काम करते हैं।

2. *हम "उसी की परिपूर्णता" हैं "जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।"* अन्य शज़्दों में, यीशु अपनी कलीसिया को पूर्ण करता है। मसीह की देह कार्य करके यीशु मसीह को ही

दिखाती है। ऐसा होने पर, जब यह पहली सदी की कलीसिया की तरह करती है, तो संसार इसकी ओर आकर्षित होता है। फिर अचानक, कलीसिया अलग होकर बाहर निकल आती है। लोगों को कलीसिया में वे बातें मिलती हैं, जो इस संसार में और कहीं नहीं हैं अर्थात उन्हें अपने लोगों में सामर्थपूर्ण ढंग से जीवित प्रभु दिखाई देता है।

कहते हैं कि बाइबल की सबसे अच्छी टीका स्वयं बाइबल ही है। ध्यान दें कि 4:7-16 किस प्रकार कलीसिया के रूप में होने की हमारी युक्ति पर प्रकाश डालता है। अर्थात परमेश्वर की सामर्थ से चलने की युक्ति पर:

> पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण [अर्थात परमेश्वर की सामर्थ] से अनुग्रह मिला है। इसलिए वह कहता है, कि वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए। ... और उस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यवक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा को कम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं। ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई के उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों। बरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं। जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिणाम से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

इन सच्चाइयों को स्थानीय कलीसियाओं के लिए तीन प्रकार से सीधे लागू करते हैं: (1) *परमेश्वर को भाने और सम्मान देने के लिए, एक मण्डली का उसकी सामर्थ से चलना आवश्यक है।* परमेश्वर हमेशा इस बात पर ज़ोर देता है कि उसके लोग अपनी नहीं बल्कि उसकी सामर्थ से चलें। (2) *उसकी सामर्थ से चलने के लिए, कलीसिया के लिए देह के रूप में कार्य करना आवश्यक है।* इसके लिए ऐसे इकट्ठ पर ज़ोर देना आवश्यक है जहां मसीही लोग "एक दूसरे" की मानते हैं। (3) *एक देह के रूप में कार्य करने के लिए, कलीसिया के लिए देह के जीवन को सबसे अधिक प्राथमिकता देना आवश्यक है।* एकलेसिया जीवन के लिए परमेश्वर का एक नया सामाजिक प्रबन्ध है। यह देह का जीवन है, जो यीशु के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ से कार्य करता है।

सारांश

इटास्का, टैक्सस में द्वितीय विश्वयुद्ध से थोड़ा पहले, एक स्कूल में लगी आग से 200

से अधिक बच्चे जिंदा जल गए थे। युद्ध के बाद, नगर के लोगों ने स्कूल का फिर से एक ऐसा भवन बनाया जिसे उन्होंने "संसार का सबसे शानदार प्रबन्ध" कहा। पूरा शहर इस चेतावनी से आश्वस्त हो गया था। उन्होंने वहां मिलने वाली सुविधा के बारे में जागरूक करने के लिए लोगों को स्परिंज़्लर तकनीक दिखाई। नगर के विकास के साथ-साथ, स्कूल में एक नया विंग शामिल करना आवश्यक हो गया। नया विंग शामिल करने पर एक चौंकाने वाली खोज हुई। स्कूल के खुलने और स्परिंज़्लर प्रणाली को शुरू किए सात वर्ष बीत गए थे। जब भवन निर्माताओं ने विंग को शामिल किया तो उन्होंने पाया कि स्परिंज़्लर प्रणाली तो जुड़ी ही नहीं थी।

ऐसा किसी मण्डली के साथ भी हो सकता है। परमेश्वर तो स्थानीय कलीसियाओं के लिए अविश्वसनीय सामर्थ की पेशकश करता है परन्तु कई कलीसियाएं उससे जुड़ती नहीं हैं। वे जो हैं वैसी बने रहने और न खिसकने का भरपूर प्रयास करती हैं, परन्तु वे देह के रूप में कार्य नहीं कर रही हैं। वे परमेश्वर के ढंग से या परमेश्वर की सामर्थ से मिलकर कार्य नहीं कर रही हैं।

ऐसी मण्डली में होने पर आप ज़्या कर सकते हैं? प्रार्थना करें और फिर और प्रार्थना करें कि परमेश्वर उस मण्डली को एक देह की तरह काम करना सिखाए। उस मण्डली के अगुओं के पास जाएं और उन्हें बताएं कि आप उन्हें बताना चाहते हैं कि एक देह की तरह कलीसिया कैसे काम कर सकती है। उन्हें बताएं कि आप इसका अंग बनने को तैयार हैं। फिर प्रार्थना करें, और देखें कि परमेश्वर कैसे कार्य करता है।

टिप्पणी

[1]एडी कारस्वैल, "अराइज़, माई लव," *ग्लोरी: हैलल ज़्यूज़िक,* द सिंगर'स वर्शिप सीरीज़ (वैस्ट मोनरो, ला.: हावर्ड पज़्लिशिंग कं., 1992), 15. अनुमति लेकर छापा गया। © 1987 माईक ज़्लार्क ज़्यूज़िक एण्ड लोअरी ज़्यूज़िक कं., Inc.

कलीसिया एक देह के रूप में	एक संगठन के रूप में कलीसिया
इकट्ठा होना अनौपचारिक तथा व्यज़्तिगत है।	इकट्ठा होना औपचारिक तथा अव्यैज़्तिक है।
अगुवे लोगों को सेवा के लिए तैयार करते हैं।	अगुवे लोगों की अगुआई करने के बजाय उन्हें कार्य करने का निर्देश देते हैं।
सदस्य एक दूसरे की सेवा करते हैं।	सदस्य कार्यक्रमों के लिए केवल स्वीकृति देते हैं।
लक्ष्य परमेश्वर के अनुग्रह तथा ज्ञान में बढ़ना है।	लक्ष्य केवल संज़्या में बढ़ना है।
एक दूसरे से स्वाभाविक तौर पर हर रोज मिलना हो जाता है।	ठहराए हुए समयों पर लोगों की अधिक उपस्थिति की उज़्मीद की जाती है।
सभी सदस्य दूसरों की सेवा करना सीखते हैं।	केवल कुछ लोगों के काम करने से कार्यक्रम चलते हैं।
सदस्यों में स्वयं यीशु दिखाई देता है।	केवल कार्य को ही पूरा किया जाता है।
सभी सदस्यों की आपस में गहरी संगति है।	बहुत से लोग जुड़ नहीं पाते और अन्त में छोड़ जाते हैं।